

पर सुबह से शाम तक सूरज की गर्मी में शहीदों की लाशों का उठाना और फिर खैमे की तरफ पलटना और फिर बहत्तर के दाग, अजीजों के सदमें और उनकी लाशों का उठाना, जवान बेटे का आँख की रौशनी ले जाना और भाई का कमर तोड़ जाना, और अपने हाथों पर एक दूध पीते बच्चे का दम टूटते हुए सम्भालना और तलवार की नोक पर अभी-अभी उसकी कब्र बनाकर उठना। अब इस हाल में नफस के जज़्बात का तकाज़ा तो यह है कि आदमी ख़ामोशी से तलवारों के सामने अपना सर बढ़ा दे और खंजर के आगे गला रख दे मगर हुसैन (अ0) इस्लामी तालीम की हिफाज़त करने वाले थे जुल्म के सामने सुपुर्दगी शरीअत के क़ानून के खिलाफ है। हुसैन (अ0) ने अब बचाव

का फ़र्ज अन्जाम देने और खुदा के दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए तलवार उठाई और वह जिहाद क्या जिसने भूली हुई दुनिया को हैदर (अ0) वाली खूबियों की याद दिला दी और इस तरह दिखा दिया कि हमारे काम और अमल, नफस के जज़्बात और तबीयत की ज़रूरतों के गुलाम नहीं हैं बल्कि फराएज़ और वाजिबात को पूरा करने और रब के हुक्मों को पूरा करने के गुलाम होते हैं चाहे फितरी ज़रूरतें इसके कितनी ही खिलाफ हों।

यही इन्सानियत की वह मेअराज है जिसको इमाम हुसैन (अ0) के बाद वाले बताते रहे और वही आज हुसैन (अ0) के किरदार में बहुत ही चमक के साथ नज़र आ रही है।

d c 7 k

आसीफ़

जायसी

कर्बला ममनून है संसार तेरा आज तक
किस क़दर दुरबार है दरबार तेरा आज तक
सोने वालों को जगाती है सदाएँ इंक़िलाब
ता क़यामत मदरसा है तू ज़माने के लिए
शरबते दीदार में तेरे है मेराजे हयात
ओढ़ ली तू ने रिदाएँ ज़िन्दगी, है इसलिए
हाकेमियत क्यों बशर की लरज़ा बर अन्दाम है
नफ़स की तामीर होती है तेरे माहोल में
तेरी खुशबु-ए-वफा से है मुअत्तर काएनात
सर यज़ीदियत उठाए भी तो वह कैसे उठाए
तेरे मक़सद पर कभी भी आँच आ सकती नहीं
आलमे इन्सानियत की कर रहा है शान से
क्या हकीक़त है "आसीफ़े जायसी" की सच यह है

नौअे इन्सानी को है इकरार तेरा आज तक
ज़र्ज़ा-ज़र्ज़ा है दुरे शहवार तेरा आज तक
है सफर में जज़्ब-ए-बेदार तेरा आज तक
शहर है कुर्आने लाला ज़ार तेरा आज तक
कौन है आसूद-ए-दीदार तेरा आज तक
मौत से अज़ाद हर बीमार तेरा आज तक
कल से लेकर जारी है इन्कार तेरा आज तक
काम में मसरूफ़ है मेअमार तेरा आज तक
किस क़दर शादाब है गुलज़ार तेरा आज तक
जौरो इस्तेबदाद पर है वार तेरा आज तक
है पसे पर्दा अमानत दार तेरा आज तक
रहनुमाई काफ़िला सालार तेरा आज तक
मोतकिद है हर बड़ा फन्कार तेरा आज तक